प्रसार पत्रक क्रमांक-12

सर्दियों में बछड़े-बछड़ियों की देखभाल कैसे करें ?

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार विभाग
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

सर्दियों में बछड़े-बछड़ियों की देखभाल कैसे करें

बछड़े बछड़ियों पशुपालक की अनमोल सम्पति होते हैं । आज की बछड़ियां कल की गाय और आज का बछड़ा, कल का सांड होता है। इसलिए उनके पालन पोषण व प्रबन्धन का बहुत अधिक महत्त्व होता है। नवजात बछड़े बछड़ियों के आरम्भिक जीवन में कुपोषण होना, उनके जीवन काल की सम्पूर्ण उत्पादन क्षमता पर असर डालता है । इसलिए अच्छी देखभाल, पोषण और छोटी आयु में होने वाली बीमारियों एवम् मौसम के बुरे प्रभाव से बचाने की सामान्य जानकारी पशु पालक को होनी चाहिए ।

आमतौर पर गाय-भैंस के बच्चे पैदा होने के कुछ दिन बाद तक माँ के दूध पर ही चलते हैं, और थनों से स्वंय दूध पीते हैं । जब नवजात बछड़े बछड़ियों को गाय से अलग करके उनको जरूरत के मुताबिक दूध पिलाया जाता है तो इस विधि को ''वीनिंग'' कहते हैं । इस वैज्ञानिक विधि को अपनाने से कई लाभ देखने को मिलते हैं । उदाहरण के तौर पर, पैदा होने से लेकर 30 दिन की आयु के बछड़ों, को उनके वजन के लगभग दसवें हिस्से के बराबर दूध की आवश्यकता होती है । थन से दूध पीने पर यह जानना मुमकिन नहीं होता कि उसने कितना दूध पिया है । बछड़े को दूध कभी कम मिलता है तो कभी ज्यादा। कम दूध पीने से बछड़ों में बढ़ौतरी कम होगी जबकि अधिक दूध पीने से बछड़ा बीमार हो सकता है । ''वीनिंग'' के तरीके का अपनाने से यह समस्याएं नहीं होती । किसी कारणवश बछड़े के मर जाने पर भी गाय लगातार दूध देती रहेगी। और मां के मरने पर बछड़े को भी दूसरी गाय या भैंस के दूध पर भी पाला जा सकता है । इसके इलावा, गाय कितना दूध दे रही है, इसका लेखा जोखा भी ठीक से रखा जा सकता है ।

सर्दियों में पोषण

नवजात बछड़ों के पोषण पर सर्दियों में कुछ खास बातें ध्यान में रखनी चाहिए। दूध थोड़ा गर्म करके पिलाएं । जन्म के तुरन्त बाद, साफ बर्तन में खीस (प्रसव के बाद का पहला दूध) निकाल कर, पिला देना चाहिए। तीन दिन बाद जब

खीस आना बन्द हो जाए तो दूध को उबाल कर ठण्डा (गुनगुना) करने के बाद एक चौड़े मुंह वाले बर्तन में डाल कर, दूध से भिगोकर उगलियाँ बछड़े के मुंह में डालें । बछड़ा जब उगली को चूसने लगे तो उसका मुंह धीरे धीरे दूध के बर्तन के पास ले जाएं। जब बछड़े का मुंह दूध की सतह को छूने लगे तो उगली को भी दूध में डुबो दें । बछड़ा उँगली चूसते-चूसते, बर्तन से दूध भी पीना शुरू कर देगा । इस प्रकार का प्रयास दो-तीन बार करने पर बर्तन से दूध पीना शुरू कर देता है । दूध पिलाना सिखाते समय धैर्य से काम लें । बछड़े को प्रतिदिन जितना दूध पिलाना हो, उसे चार भागों में बांटकर, 3-3 घण्टों बाद पिलाना चाहिए । ध्यान रहे कि दूध ठण्डा न हो, गुनगुना हो । नहीं तो बछड़ों को दस्त लग सकते हैं । कभी कभार गाय बछड़ा पास लाये बिना दूध देने में परेशानी कर सकती है, पर आमतौर पर संकर नस्ल की गायों में ऐसी दिक्कत पेश नहीं आती है ।

सर्दियों में बछड़ों के लिए आरम्भिक आहार (काफ स्टारटर) बनाये गये हैं जो कि तीन मास तक की आयु तक दिये जा सकते हैं । **सर्दियों में आमतौर पर जो आरम्भिक आहार प्रयोग में लाया जाता है उसकी संरचना (प्रति क्विंटल) इस प्रकार है :- अलसी 18 किलो, मक्की का दलिया 37 किलो चोकर 18 किलो, खनिज मिश्रण 1.5 किलो, और नमक 300 ग्राम ।**

बच्चों को दूसरे सप्ताह से (दूध पिलाने के इलावा) आरम्भिक आहार और हरे चारे को साथ साथ शुरू कर देना चाहिए जिसकी मात्रा का विवरण इस प्रकार है:-

दूसरे सप्ताह	हरा चारा 1/2 किलो,	आरम्भिक आहार 50 ग्राम
तीसरे सप्ताह	'' 1 किलो	'' 100 ग्राम
चौथे सप्ताह	'' 1 किलो	'' 300 ग्राम
पांचवे सप्ताह	'' 1.5 किलो	'' 500 ग्राम
सातवें सप्ताह	'' 2.5 किलो	'' 700 ग्राम
नवमें सप्ताह	'' 3 किलो	'' 1000 ग्राम
ग्याहरवें सप्ताह	'' 3 किलो	'' 1300 ग्राम
तेहरवें सप्ताह	'' 5 किलो	'' 1500 ग्राम

गौशाला में बछड़ों-बछड़ियों के लिए जमीन पर लगभग 1 किलो भूसा या पुआल की बिछाली भी डाल देनी चाहिए । इससे गर्मी मिलेगी और इच्छा होने पर बच्चे कुछ सूखा चारा खा भी सकते हैं । इस प्रकार पोषण की देखभाल करने पर 3 मास की आयु में ही बछड़े-बछड़ियों का वजन जन्म के समय के शरीर भार से लगभग दुगना हो जाता है ।

बीमारियों से बचाव

इसके इलावा सर्दियों में बछड़े-बछड़ियों की कुछ खास बीमारियों से बचाव भी जरूरी है । कुछ खास बीमारियां जो थोड़ी सी सावधानी से टाली जा सकती है, उनकी जानकारी पशुपालकों को यहाँ दी जा रही है :

1. नाभि का सड़ना

इसको अंग्रेजी में *"नेवल इल"* कहते हैं । नवजात बछडों में सफाई की उचित व्यवस्था की कमी से नाभि में पीप (मवाद) पड़ जाती है । नाभि गीली व चिपचिपी दिखाई देती है। एक-दो दिन में नाभि गरम व सख्त हो जाती है और उसमें सूजन व पीड़ा हो जाती है । बच्चा दूध नहीं पीता है, सुस्त पड़ा रहता है । उसे बुखार भी हो सकता है । ज्यादा बढ़ने पर जोड़ों में सूजन आ जाती है और बछड़ा लंगड़ाने लगता है । इसकी रोकथाम के लिए, गौशाला को साफ सुथरा रखना चाहिए और नाभि को किसी कीटनाशक दवा से साफ करके टिक्चर आयोडिन तब तक लगाते रहना चाहिए जब तक नाभि सूख न जाए । पशु चिकित्सक की सलाह भी समय रहते ले लेनी चाहिए ।

2. सफेद दस्त

अंग्रेजी में "व्हाइट स्काऊर" नामक यह प्राणघातक रोग है जो कि 24 घण्टे में ही बछड़ों की मृत्यु का कारण बन सकता है । यह रोग एक माह तक के बच्चों को होता है । बुखार आता है, भूख कम लगती है और बदहजमी हो जाती है। कुछ समय बाद पतले दस्त आने शुरू होते हैं जो पीलापन लिए होते हैं । दस्तों में एक खास किस्म की बदबू आती है । कभी खून भी आ जाता है और पेट फूल जाता है, इस रोग से बचाव के लिए बछड़ों को प्रर्याप्त मात्रा में खीस पिलाएं ।

3. न्यूमोनिया

सर्दी के मौसम में और गन्दे व सीलन वाले स्थानों में रहने वाले पशुओं में यह रोग अधिक फैलता है । आमतौर पर तीन सप्ताह से चार मास तक की आयु के बछड़ों में सबसे अधिक होता है । इसके मुख्य लक्षण हैं : नाक व आँख से पानी बहना, सुस्ती, खाने में अरूचि, बुखार, सांस लेने में दिक्कत, खांसी और अन्त में मृत्यु । इससे बचाने के लिए बछड़ों को साफ व हवादार बाड़ों में रखें, जहां सीलन न हो । बीमार बछड़ों से स्वस्थ बछड़ों को दूर रखें । रोग होते ही पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके इलाज करायें, अन्यथा रोग घातक हो सकता है ।

4. पेट में कीड़े

दूध पीने वाले बछड़ों के पेट में आमतौर पर लम्बे, गोल कीड़े हो जाते हैं। इसके लक्षण है - सुस्ती, खाने में अरूचि, और आंखों की झिल्ली का छोटा हो जाना । इससे बचने के लिए, बछड़ों को साफ पानी पिलाएं । स्वस्थ बछड़ों को रोगी बछड़ों से दूर रखें क्योंकि रोगी बछड़ों के गोबर में कीड़ों के अण्डे होते हैं । गोबर की नियमित जांच करवाते रहना चाहिए और कीड़ों का इलाज पशु चिकित्सक से करवाना चाहिए ।

5. पैराटाईफायड

दो सप्ताह से लेकर 3 महीने तक के बछड़ों में यह रोग ज्यादातर पाया जाता है । गन्दगी और भीड़ वाली गौशालाओं पलने वाले बछड़ों में यह रोग अधिक फैलता है । इसके मुख्य लक्षण हैं : तेज बुखार, खाने में अरूचि, थूथन सूख जाना, आंखों में चिपचिपाहट तथा सुस्ती । गोबर का रंग पीला या गन्दला हो जाता है और एक खास किस्म की बदबू आती है । इस रोग के बचाव के लिए , गौशाला में बछड़ों की भीड़ न होने दें और सफाई पर विशेष ध्यान दे । रोग के लक्षण दिखते ही पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके इलाज करवाएँ ।

पोषण व रख रखाव में थोड़ा अधिक ध्यान देने से सर्दियों में कम खर्च से बछड़े बछड़ियां पाली जा सकती है और इस प्रकार आर्थिक हानि से बचा जा सकता है ।

आलेख

डा. आलोक शर्मा, सह-प्राध्यापक
डा. शिवानी कटोच, सहायक प्राध्यापक

पशु चिकित्सा एवम् पशुपालन प्रसार विभाग,
चौ. सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062